आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक :-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 9 • अंक-2446 • उदयपुर, शनिवार 04 सितम्बर, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

चलने को आतुर लिंकन रानी

जब खुशियां द्वार पर दस्तक देती दिखाई दें और एकाएक वे काफूर होने लगे तो व्यक्ति अथवा परिवार पर क्या बीतेगी, उसकी कल्पना से ही मन सिहर उठता है। ओडिशा के ब्रह्मपुरगंजाम निवासी कानूस्वाय के परिवार के साथ ऐसा ही कुछ हुआ कि खुशियां आती दिखाई दी और जब वे आ गई तो गहरे तक पीड़ा दे गई। कानूस्वाय की पत्नी ने वर्ष 2018 में कस्बे के सरकारी अस्पताल में अपनी पहली संतान को जन्म दिया। माता–पिता और परिवार आने वाले बच्चे के लालन–पालन को लेकर छोटे–छोटे लेकिन रंगीन सपने सजा रहे थे। बच्ची के जन्म की खुशी तो मिली लेकिन अगले ही पल वह खुशी बिखर गई। जन्म लेने वाली बच्ची के दोनों पांव पेट से सटे थे। माता–पिता इस स्थिति में शोक और संशय में डूब गए। डॉक्टरों ने किसी तरह उन्हें दिलासा दिया कि बच्ची के पांव को वे सीधा करने की पूरी कोशिश करेंगे, हालांकि इसमें थोड़ा वक्त लगेगा।

बच्ची को माता–पिता ने लिंकन रानी नाम दिया। इस तरह 8–9 महीने बीत गए। डॉक्टरों ने पांव तो लम्बे–सीधे कर दिए, लेकिन बच्ची अभी ठीक से खड़ी नहीं हो पा रही थी। इसका कारण दोनों पांव के पंजों का आमने–सामने मुड़ा हुआ होना था। कुछ अस्पतालों में दिखाया भी पर कहीं भी संतोषजनक जवाब नहीं मिला।

किसी बड़े अस्पताल का रुख करना उनकी गरीबी के चलते नामुमकिन था। वह दिन–रात मजदूरी कर जैसे–तैसे परिवार का पोषण कर रहा था। करीब 7–8 माह पूर्व उन्हीं के गांव का एक दिव्यांग नारायण सेवा संस्थान, उदयपूर में पांव का ऑपरेशन करवाकर आराम से चलता हुआ जब घर लौटा तो उसे देख कानू को भी अपनी बिटिया के लिए उम्मीद की एक किरण दिखाई दी।

अप्रेल 2021 में माता–पिता लिंकन को लेकर संस्थान में आए, जहां उसके दांए पंजे का सफल ऑपरेशन हुआ और इस वर्ष 10 अगस्त को वह दूसरे पंजे और घुटने के ऑपरेशन के लिए आए, 14 अगस्त को यह ऑपरेशन सफल रहा।

पहले वाले पंजे के ठीक होने से माता–पिता को बाएं पांव के भी पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है तो लिंकन अन्य बच्चों की तरह चलने–दौड़ने को मचल रही है।

आमदरी में सेवा-सावनोत्सव

गिर्वा तहसील के आदिवासी परिवारों के साथ संस्थान ने 25 जुलाई को 'सावनोत्सव' मनाया। इसमें गुजरात के अहमदाबाद व राजकोट के 70 से अधिक संस्थान सहयोगियों व साधकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में आमदरी व आसपास फलों–ढाणियों के गरीब परिवारों को राशन किट, पोषाहार, छाते व वस्त्रों का वितरण किया गया।

सेवा शिविर से पूर्व भगवान शिव परिवार की पूजा–अर्चना हुई। संस्थापक पूज्य कैलाश जी 'मानव' के सेवा संदेश प्रसारण के साथ शिविर का समापन हुआ। संचालन निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने किया। शिविर व्यवस्था में तरूण जी नागदा, कैलाश जी चौधरी, गोपेश जी शर्मा, दिलीप सिंह जी चौहान ने सहयोग किया।

कोविड के परिप्रेक्ष्य में सार्थक दिनचर्या

संस्थान में 27 जुलाई को आयोजित आयुष संवाद कार्यक्रम में उदयपुर के पं. मदनमोहन मालवीय आयुर्वेद महाविद्यालय के चिकित्सकों ने निराश्रित आवासिय विद्यालय के बालकों को स्वस्थ जीवन की दिनचर्या से रूबरू करवाया।

उन्होंने कोरोना की संभावित तीसरी लहर में बच्चों पर आसन्न खतरे की चर्चा करते हुए उन्हें सावधानी बरतते हुए जीवनशैली में कुछ खास बातों का ध्यान रखने की सलाह दी। उन्होंने खान–पान में फल, हरी सब्जी, सूखे मेवे, आदि के उपयोग की सलाह के साथ कोरोना गाइडलाइन की अनुपालना करने को कहा। कार्यक्रम में बच्चों ने भी कुछ प्रश्न कर अपनी जिज्ञासा को शांत किया।

कार्यक्रम को डॉ. दीक्षा जी खतुरिया, डॉ. ज्योति जी, डॉ.विदुषी जी गुप्ता व डॉ.निशा जी गुप्ता ने सम्बोधित किया। उन्होंने बच्चों को अपनी दिनचर्या हल्के–फुल्के योगासन के साथ आरम्भ करने को कहा। संवाद में 178 बच्चों ने उपस्थिति दी। कार्यक्रम का संयोजन राकेश जी शर्मा ने किया।

श्रीमद्भागवत पारायण सप्ताह

संस्थान की ओर से जुलाई माह में बरखेड़ा (भोपाल) व वृंदावन में श्रीमद्भागवत पारायण सप्ताह सम्पन्न हुए। कोरोना के चलते श्रोताओं ने घर बैठे विविध चैनलों पर सीधे प्रसारण का आनंद लिया। व्यासपीठ से विश्वकल्याण और आरोग्य की कामना की गई।

बरखेड़ा – संस्थान की ओर से 4 से 10 जुलाई तक बरखेड़ा–भोपाल के कालीबाड़ी मंदिर में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया गया। कोरोना गाइडलाइन की अनुपालना के क्रम में कथा का संस्कार चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया। जिसका धर्म प्रेमी परिवारों ने घर बैठे आनंद लिया। व्यासपीठ पर विराजित डॉ. सलिल महाराज ने श्रीमद्भागवत कथा श्रवण से जीवन में होने वाले सकारात्मक परिवर्तनों की जानकारी के साथ कथा के विभिन्न प्रसंगो की मार्मिक व विद्वतापूर्ण व्याख्या की।

वृंदावन – मथुरा (उत्तरप्रदेश) जिले के वृंदावन में बृज सेवाधाम–राधागोविन्द मंदिर में 5 से 11 जुलाई तक श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन सम्पन्न हुआ। व्यासपीठ पर पूज्य बृजनंदन जी महाराज विराजित थे।

कोरोना के चलते श्रोताओं की उपस्थिति होने से इसका देशभर में धर्मप्रेमियों के लिए आस्था चैनल प्रसारण हुआ। कोरोनाकाल में लम्बे समय बाद कथा के लाइव प्रसारण पर श्रद्धालुओं ने प्रसन्नता व्यक्त की। कथाव्यास श्री बृजनंदन जी महाराज ने श्रीमद्भागवत में वर्णित विभिन्न प्रसंगों व लीलाओं का मर्मस्पर्शी विवेचन करते हुए कि श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करना कल्पवृक्ष के फल को ग्रहण करने के समान है। जिससे मनुष्य जीवन सार्थक हो जाता है।

चल पड़ी थमी हुई जिन्दगी

विभिन्न घटनाओं–दुर्घटनाओं में हाथ–पैर गंवा देने वाले भाई–बहनों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) लगाने के लिए विभिन्न शहर–कस्बों में जुलाई 2021 में शिविर आयोजित किए गए। इससे पूर्व इन दिव्यांग बन्धु–बहिनों के कृत्रिम अंग लगाने के लिए मेजरमेंट शिविर लगाए गए थे। जुलाई–अगस्त के मध्य करीब 800 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाए गए।

भायन्दर – संस्थान की भायन्दर (मुम्बई–महाराष्ट्र) शाखा के तत्वावधान में 7 अगस्त को ओस्तवाल बगीची में दिव्यांगों की सेवार्थ निःशुल्क कृत्रिम अंग(हाथ–पैर) नाप शिविर आयोजित हुआ। स्थानीय शाखा संयोजक श्री किशोर जैन एवं मुम्बई सेवा संयोजक श्री कमलचन्द्र जी लोढ़ा ने संस्थान की स्थानीय शाखा के संरक्षक एवं शिविर सौजन्यकर्ता समाजसेवी श्री उमरावसिंह जी ओस्तवाल सहित मुख्य सलाहकार कान्तिलाल जी बाबेल व अन्य अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि सहायक पुलिस आयुक्त श्री शांतिलाल जी जाधव एवं विशिष्ट अतिथि श्री मनीष जी मुणोत व श्रीमती मनीषा जी परमार थी। अध्यतथता वरिष्ठ पुलिस निरिक्षक श्री मिलन जी देसाई ने की।

दुर्घटनाओं में हाथ–पांव गंवाने वाले दिव्यांगों के कल्याणर्थ आयोजित इस शिविर में 92 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ। जिनके कृत्रिम अंग व कैलीपर बनाने हेतु टेक्नीशियन श्री नाथूसिंह जी व श्री भंवरसिंह ने नाप लिया। शिविर में प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी लड्ढा एवं गोरेगांव आश्रम प्रभारी श्री ललित जी लोहार, भायन्दर आश्रम प्रभारी श्री मुकेश जी सेन, श्री भरत जी भट्ट, श्री शरद कुमार जी व श्री महेन्द्र जाटव समस्त सहित कार्यकारिणी सदस्यों ने सेवाएं दी।

देहरादून– देहरादून (उत्तराखंड) में 13 जुलाई को सम्पन्न कृत्रिम अंग वितरण शिविर में 29 दिव्यांगों को कृत्रिम अंगलगाए गए। जबकि 11 को उनके पांव के नाप के अनुसार कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि प्रधान श्रीमती मालादेवी तथा विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी गुप्ता, श्री सोहनलाल जी व श्रीमती अनुसूईया जी नेगी थी। अध्यक्षता श्री खेमचद्र जी गुप्ता ने की। संस्थान के स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री मुकेश जी जोशी ने अतिथियों का स्वागत एवं श्री अखिलेश अग्निहोत्री ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

नरवाणा– हरियाणा के जींद जिले के नरवाना शहर में 25 जुलाई को निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। संस्थान की नरवाना शाखा के तत्वावधान में सम्पन्न शिविर में 37 दिव्यांगों को कृत्रिम हाथ–पैर तथा 25 को कैलीपर लगाए गए। मिलन पैलेस में आयोजित शिविर के मुख्य अतिथि महंत श्री अजयगिरी जी महाराज थे। अध्यक्षता नगर परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री भारत भूषण जी गर्ग ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जय सिंह जी गर्ग, श्री प्रवीण जी मित्तल व राकेश जी शर्मा मंच पर बिराजे थे। स्थानीय शाखा के प्रभारी श्री राजेन्द्र जी गर्ग ने अतिथियों का स्वागत किया। कृत्रिम अंग लगाने का कार्य संस्थान के टेक्नीशियन श्री भंवरसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने किया। संचालन श्री हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने जबकि व्यवस्था में श्री मुन्नासिंह जी, भरत कुमार जी व रामसिंह जी ने सहयोग किया।

छतरपुर– केयर इंग्लिश स्कूल, छतरपुर (मध्यप्रदेश) में 11 जुलाई को आयोजित शिविर में 39 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) व 9 को कैलिपर प्रदान किए गए। मुख्य अतिथि डॉ. रामकुमार जी अवस्थी थे। जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में उनके साथ मंच पर रॉटरी क्लब के सचिव श्री स्वतंत्र जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री मुकेश जी सोनी, इनव्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती ज्योति जी चौबे समाजसेवी श्री पंकज कुमार जी, व श्री उमेश जी ललवानी मौजूद थे। अध्यक्षता रॉटरी क्लब के अध्यक्ष श्री मुकेश जी चौबे ने की।

गुरूग्राम– वैश्य समाज की सेक्टर–4 स्थित धर्मशाला में 25 जुलाई को सम्पन्न दिव्यांग जांच, ऑपरेशन, चयन, कृत्रिम अंग माप एवं सहायक उपकरण वितरण शिविर से बड़ी संख्या में दिव्यांग भाई–बहन लाभान्वित हुए। मित्सुबिशी इलेक्ट्रिक ऑटोमोटिव इंडिया प्रा. लिमिटेड के प्रतिनिधि श्री विशाल जी नागदा के मुख्य अतिथ्य में सम्पन्न शिविर में 20 दिव्यांगों को ट्राइसाइकिल, 10 को व्हीलचेयर, 10 को बैसाखी जोड़ी प्रदान की गई। जबकि 10 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग व कैलिपर लगाने के लिए मेजरमेंट लिया गया। चार दिव्यांगों का पोलियों सुधार के लिए निःशुल्क ऑपरेशन हेतु चयन किया गया। शिविर की अध्यक्षता समाजसेवी श्री रघुनाथ जी गोयल ने की। विशिष्ट अतिथि श्री रमेश जी सिंगला थे। दिव्यांगों का चयन डॉ. एस. एल. गुप्ता, टेक्निशियन नाथूसिंह जी व किशनलाल जी ने किया। अतिथियों का स्वागत स्थानीय आश्रम प्रभारी श्री गणपत जी रावल ने जबकि संचालन श्री अखिलेश अग्निहोत्री ने किया।

कांगड़ा– हिमाचल प्रदेश में कांगड़ा जिले के ज्वालाजी नगर में 17–18 जुलाई को कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। मातृ सदन सरस्वती विद्यालय परिसर के निकट सम्पन्न शिविर में 28 दिव्यांगों को कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) तथा 40 के पांवों में कैलिपर लगाए गए।

टेक्नीशियन श्री नरेश जी वैष्णव व श्री किशन जी लौहार ने माप के अनुसार कृत्रिम अंग फिट किए। मुख्य अतिथि पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रेमकुमार जी धूमल थे। अध्यक्षता राज्य के पूर्व मंत्री श्री रमेश जी घवाला ने की। मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में नारायण सेवा संस्थान की हमीरपुर शाखा के संयोजक श्री रसीलसिंह जी मानकोटिया, पत्रकार श्री संजय जी जोशी, पूर्व मंत्री श्री रवीन्द्र जी रवि, समाजसेवी श्री पंकज जी शर्मा व श्री रामस्वरूप जी शास्त्री मौजूद थे। शिविर प्रभारी अखिलेश अग्निहोत्री ने अतिथियों का स्वागत एवं श्री रमेश जी मेनारिया ने आभार व्यक्त किया।

सम्पादकीय

भावना मानव की स्वाभाविक संवेदना है। भावना सद् भी होती है और दुर् भी। सद् हो तो वह सद्भावना हो जायेगी तथा दुर् हो तो दुर्भावना। यह हमारे चित्त पर निर्भर करता है कि हम भावना को सद्भावना बनाते हैं या दुर्भावना। जब हम औरों की प्रसन्नता को अपनी प्रसन्नता अनुभव करना शुरू करते हैं तो हमारी भावना सद्भावना बन जाती है। हम किसी के साथ स्पर्धा या द्वेष करते हैं तो भावना दुर्भावना हो जाती है।

आश्चर्य की बात तो यह है कि हम अपने प्रति सबकी सद्भावना चाहते हैं पर दूसरों के साथ सद्भावना रखने में हम कृपण ही रहते हैं। ऐसे ही कोई हमारे प्रति दुर्भावना रखे तो बड़ी पीड़ा होती है परन्तु हम किसी के प्रति दुर्भावना रखते हैं तो हमें कष्ट नहीं वरन् कुछ कुछ संतोष सा ही प्रतीत होता है।

ये बातें ठीक नहीं है, यह भी हम सब जानते हैं, किन्तु पालन नहीं करते। जानते हैं पर मानते नहीं यह तो ईमानदारी नहीं होती है। हम प्रयास करें कि भावना को सद्भावना ही रखें। दुर्भावना से दूर रहें। शायद यही मानवता पंथ का एक प्रमुख सूत्र है।

कुछ काव्यमय

सद्भावों के सेतु चढ़कर,
हमें उतरना पार आ गया।
सबके हित का चिंतन करके
जीवन में उल्लास छा गया।
ऐसे ही जीवन नौका को,
खेते रहना है प्रभुवर।
सरल मार्ग और सही दिशा में,
चलते रहें सदा सत्वर।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

बिन सोचें वचन न दें

कथा चल रही थी– कैकेयी के कुप्रसंग की। घर तोड़ने के उपरान्त। भई रात की बात तो करनी पड़ेगी– क्या करें? मैं तो पूर्णमासी का उपासक हूँ। हे! अमावस्या तुझे आना हो तो आ जाओ। मैं तुम्हें भी प्रणाम करूंगा लेकिन पूर्णमासी का चन्द्रमा तो उदय होगा। जब पूर्ण चन्द्रमा उदय होगा। हम उसी के उपासक हैं।

मंथरा की बातों में कैकेयी बहक गयी। राजा ने देखा, रानी अरे! अयोध्या में बाजे बज रहे है। साज सज रहे है। कहीं नृत्य हो रहा है। कहीं भजन हो रहे है। कहीं कीर्तन चल रहा है। कहीं सत्संग चल रहा है। देव मन्दिर में घण्टे बज रहे हैं, आरतियाँ हो रही है, कहीं शंख की ध्वनी निकल रही है। ऐसे समय! तू ऐसे पड़ी हुई है। गहने इधर पड़े हुए है।

कैकेयी बोलती नहीं है, फूँफकारती हूँ। राजा बड़ा चकित अरे कैकेयी! आज तो उत्सव का दिन है। तूं कहती थी कि– राम तो मुझे भरत से भी लाड़ले है। उन्हीं राम को कल तुम्हारी खुशी के अनुसार राज्य दिया जा रहा है। कुछ मांग लो इस खुशी में, कुछ मांग लो।

कैकेयी बोली– कहते हो मांग लो, मांग लो। कुछ देते तो हो नहीं? अरे तुम्हारी राम की सौगन्ध। राम की सौगन्ध खाता हूँ। तुम मांगोगी जो दे दूंगा। अरे, पहले भी आपने कहा था दो वरदान। कभी इच्छा हो तो ले लेना, इच्छा हो जब मांग लेना। आपने तो दिये ही नहीं। ओहो! दशरथ जी को याद आया। बोले– हाँ, रानी कैकेयी मुझे अभी याद आया। भूलने की कुछ आदत है। मैं तो भूल गया लेकिन तुमने याद दिला के अच्छा किया। मांग लो। बोले– पक्की बात दोगे? राम की सौगन्ध खायी है।

रघुकुल रीत सदा चली आई,
प्राण जाई पर वचन न जाई।

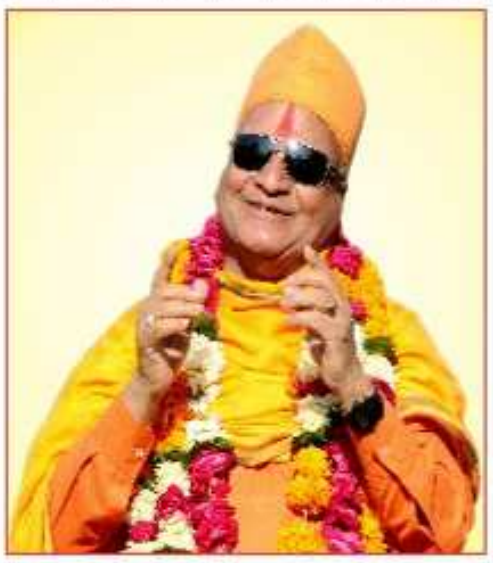

मैं तूं कहेगी जो दूंगा। ऐसा भी कभी नहीं होना चाहिये कि, बिना विचारे प्रतिज्ञा कर लो। भावावेश में कभी प्रतिज्ञा न करें, सोच समझ कर बोलें, अन्तर्मन को जगाय नमः।

अन्तर्मन को दशरथ जी ने नहीं जगाया। लेकिन देखो, समय की पहचान देखो। है समय बड़ा बलवान। कैसा समय आ गया? एक नारी के सामने मजबूर होकर बैठे हैं। जब कह दिया, बिना विचारे बोल दिया, रामजी की सौगन्ध है।

आप और हम ऐसा नहीं करें। कोई गलत वचन मांग ले तो नहीं देना भाइयों और बहनों। अब रानी ने गहने भी पहन लिये। अच्छा प्रतिज्ञा याद रखना। हाँ, हाँ, याद है और बोल उठी– पहला वचन और वरदान मैं मांगती हूँ। वरदान नहीं मांगा, श्राप मांग लिया। भरत जी को राज्य मिले। तापस वेश, उदासीन हो के वैराग्यवान हो के सब तरह के आकर्षण से मुक्त हो के, राम को चौदह साल का वनवास। दशरथ जी तो अचेत होकर गिर पड़े।

गीत –

तापस वेश, विशेषी उदासी।
चौदह बरस राम बनवासी।।

कैसा कुकृत्य किया? कैकेयी पर कलंक लग गया। बाद में तो कथा में आपको विदित है राम राम राम कहि दशरथ जी ने अपने प्राण त्याग दिये। मृत्यु को प्राप्त होना पड़ा। ये राम कथा अजर, अमर गुणनिधि सुत होई – की कथा है। ये कथा–

हनुमान तेही परसा कर,
पुनि किन्ह प्रनाम।
राम काजु कीन्हें बिनु,
मोहि कहाँ बिश्राम।।

ये रामकथा आनन्द की कथा है। ये मन्थरा की कथा नहीं है, ये कैकेयी की कथा नहीं है। यदि राम भगवान केवल चक्रवर्ती सम्राट बन जाते तो कई चक्रवर्ती सम्राट की पंक्ति में वो भी हो जाते। देवताओं को लगा था। राम भगवान वन में पधारे, रावण का नाश करे। अर्थात् अभिमान, क्रोध का नाश करे, ये तामसिक भावों का नाश करे। इसलिए कथा है।

– कैलाश 'मानव'

अंधा घोड़ा

सही स्थान पर बोया गया
सुकर्म का बीज ही,
महान फल देता है।

शहर के नजदीक एक फार्म हाउस में दो घोड़े रहते थे। दूर से वे दोनों बिल्कुल एक जैसे दिखते थे, पर पास जाने पर पता चलता था कि उनमें से एक घोड़ा अंधा है, पर अंधा होने के बावजूद फार्म के मालिक ने उसे वहाँ से निकाला नहीं था, बल्कि उसे और भी अधिक सुरक्षा और आराम के साथ रखा था। अगर कोई थोड़ा और ध्यान देता तो उसे ये भी पता चलता कि मालिक ने दूसरे घोड़े के गले में एक घंटी बाँध रखी थी जिसकी आवाज सुनकर अंधा घोड़ा उसके पास पहुँच जाता और उसके पीछे–पीछे बाड़े में घूमता। घंटी वाला घोड़ा भी अपने अंधे मित्र की परेशानी समझता, वह बीच–बीच में पीछे मुड़कर देखता और इस बात को सुनिश्चित करता कि कहीं वह रास्ते से भटक ना जाए। वह ये भी सुनिश्चित करता कि उसका मित्र सुरक्षित वापस अपने स्थान पर पहुँच जाए और उसके बाद ही वह अपनी जगह की ओर बढ़ता।

दोस्तों, बाड़े के मालिक की तरह ही भगवान हमें बस इसलिए नहीं छोड़ देते कि हमारे अन्दर कोई दोष या कमियाँ हैं। वे हमारा ख्याल रखते हैं और हमें जब भी जरूरत होती है तो किसी ना किसी को हमारी मदद के लिए भेज देते हैं। कभी–कभी हम वो अंधे घोड़े होते हैं, जो भगवान द्वारा बाँधी गई घंटी की मदद से अपनी परेशानियों से पार पाते हैं, तो कभी हम अपने गले में बंधी घंटी द्वारा दूसरों को रास्ता दिखाने के काम आते हैं।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

जबलपुर में शिविर समाप्त कर वह उदयपुर लौटा ही था कि हरिद्वार से उसे अनुमति पत्र मिल गया। एक माह के प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने हेतु उसका आवेदन स्वीकार हो गया था। उसने महीने भर की छुट्टी ली और हरिद्वार पहुँच गया। यहां उसे एकदम नये तरह के अनुभव प्राप्त हुए जिनसे उसके जीवन को एक नई दिशा मिली। आध्यात्मिक तथा वैचारिक प्रशिक्षण के साथ साथ दैनन्दिन जीवन की व्यावहरिक आवश्यकताओं को समर्पण भाव से पूर्ण करने की दृष्टि भी प्रदान की गई।

आश्रम में पूरे परिसर साफ–सफाई का समूचा दायित्व प्रशिक्षणार्थियों का था। कैलाश इसमें अति उत्साह से बढ़ कर भाग लेता। शौचालय पुरानी देशी पद्धति के थे जिनकी सफाई से हर कोई कतराता मगर कैलाश आगे होकर शौचालयों की सफाई का जिम्मा खुद लेता। एक बार पहले भी वह इसी कार्य का जिम्मा ले चुका था इसलिये उसके लिये यह कोई नई बात नहीं थी। इस कार्य में उसे इतना आनन्द आता कि उसे मन ही मन एहसास होता जैसे उसमें कोई नये भाव जाग रहे हों।

शिविर से लौटने के पश्चात् कैलाश ने अपने आपको बदला हुआ पाया। जीवन में कुछ करने की एक ललक सी उसमें जग गई। दिनरात अब वह एक ही बात सोचने लगा कि कुछ नया करना है। इसकी शुरुआत उसने प्रत्येक रविवार को यज्ञ आयोजित कर की। यज्ञ के मंत्रों में जीवन सुधार की व्याख्या होती। देव दक्षिणा देनी पड़ती जिसके अन्तर्गत अपनी एक बुराई का त्याग करना होता था तथा एक अच्छाई ग्रहण करने का संकल्प लेना होता था।

अंश - 102

जाने लकवा (पेरालाइसिस) के बारे में

जैसे किसी का मुंह टेढ़ा हो जाना, आंख का टेढ़ा हो जाना, हाथ या पैर का टेढ़ा हो जाना, या शरीर किसी एक साइड से बिल्कुल काम करना बंद कर दें, ये सामान्यतया पक्षाघात की पहचान है।

लकवा (पेरालाइसिस) होने का 3 प्रमुख कारण :–

1 किसी अंग का दबना– शरीर के किसी अंग का लगातार अधिक समय तक दबे रहने से भी लकवा हो सकता है। दरअसल किसी अंग के लगातार दबने से उस हिस्से पर रक्त का प्रवाह ठीक से नहीं हो पाता, जिसकी वजह से हमारा दिमाग उस हिस्से कपर रक्त संचालन को रोक देता है। रक्तसंचालन रूकने के बाद उस हिस्से पर तंत्रिका तंत्र भी शून्य हो जाता है और हमें लकवाग्रस्त जगह शून्य होने की वजह से एकदम भारीपन लगता है।

2 अम्लीय पदार्थ का सेवन –अम्लीय पदार्थ के सेवन से रक्त पर अम्ल की मात्रा बढ़ जाती है, जिसकी अशुद्धियां धमनियों तक रुक जाती है और उनमें रक्त प्रवाह बाधित होता है और लकवा हो जाता है।

3 ज्यादा तनाव में रहने से –कभी–कभी ज्यादा तनाव से रहने से मस्तिष्क में खून जम जाता है, जिसके कारण पैरालिसिस होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए ज्यादा चिंता या तनाव में नहीं रहना चाहिए।

लकवा (पेरालाइसिस) होने पर तुरंत करें ये उपाय :–

1 लकवा होने पर मरीज को तुरंत एक चम्मच शहद में 2 लहसुन मिलाकर खिलाये। इससे लकवा से छुटकारा मिल सकता है।

2 कलौंजी के तेल से लकवे वाली जगह पर मालिश करें।

3 पीड़ित व्यक्ति को मिस्सी रोटी(चने का आटा) और शुद्ध घी (मक्खन नहीं) का प्रयोग प्रचुर मात्रा में करना है। शहद का प्रयोग भी ज्यादा से ज्यादा अच्छा रहेगा।

4 लाल मिर्च, गुड़–शक्कर, कोई भी आचार, दही, छाछ, कोई भी सिरका, उड़द की दाल पूर्णतया वर्जित है। फल में सिर्फ चीकू और पपीता ही लेना है, अन्य सभी फल वर्जित है।

5 शुरूआती दिनों में किसी भी मालिश से परहेज रखें। तब तक कोई मालिश न करें जब तक पीड़ित कम से कम 60 प्रतिशत तक स्वस्थ न हो जाए।

6 योगिक एवं व्यायाम क्रियाएं नियमित रूप से करे।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

प्रभु की कृपा
भयो सब काजू।
जन्म हमार
सफल भयो आजु।।

एक आदरणीय डॉ. एच. एल. मेहता साहब हॉस्पीटल के सामने जिनका मेहता एक्स–रे क्लीनिक है, उनको लिया। नवरत्नमल जी को लिया डॉक्टर साहब को। और प्राकृतिक चिकित्सालय उदयपुर का हाँ महाराज जहाँ है। जहाँ आगे से होकर के जगदीश मन्दिर आ जाता है। गर्वमेन्ट प्रिन्टींग प्रेस के सामने से एस.एन. शर्मा जी को लिया। डॉक्टर एस.एन. शर्मा जी शिशु रोग चिकित्सक। ऐसे हमारे बम साहब डॉक्टर बी. एस. बम साहब एक जमाने में बहुत प्रसिद्ध रहे फिजिशयन बम साहब। जनरल हॉस्पीटल के सामने कीगली में उनका बड़ा बंगला और पहुच गये नाई।आदरणीय मफतकाका साहब ने कहा– कैलाशजी आप सामान मंगाते रहना।

बोलिये क्या भेजू? साहब एक ट्रक सोयाबीन और करीबन पांच सौ बेग दूध पाउडर के, पच्चीस–पच्चीस किलो के एक ट्रक शक्कर, चार सौ बोरी गेंहू आप भिजवा दे। अरे! कैलाश वो फार्म भेजे थे वो, उसकी फिक्स लैंग्वेज है कि यह सामान, निम्नलिखित सामग्री बिना कास्ट, जातीगत भेदभाव नहीं, ऊँच नीच का भेदभाव नहीं। उनको निःशुल्क वितरण की गई है। ऐसे सर्टिफिकेट एक सिग्नेचर आपका होगा। काउन्टर सिग्नेचर बाई एडिशनल मजिस्ट्रेड या एस.डी. ओ. सब डिवीजनल ऑफिसर।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 229 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

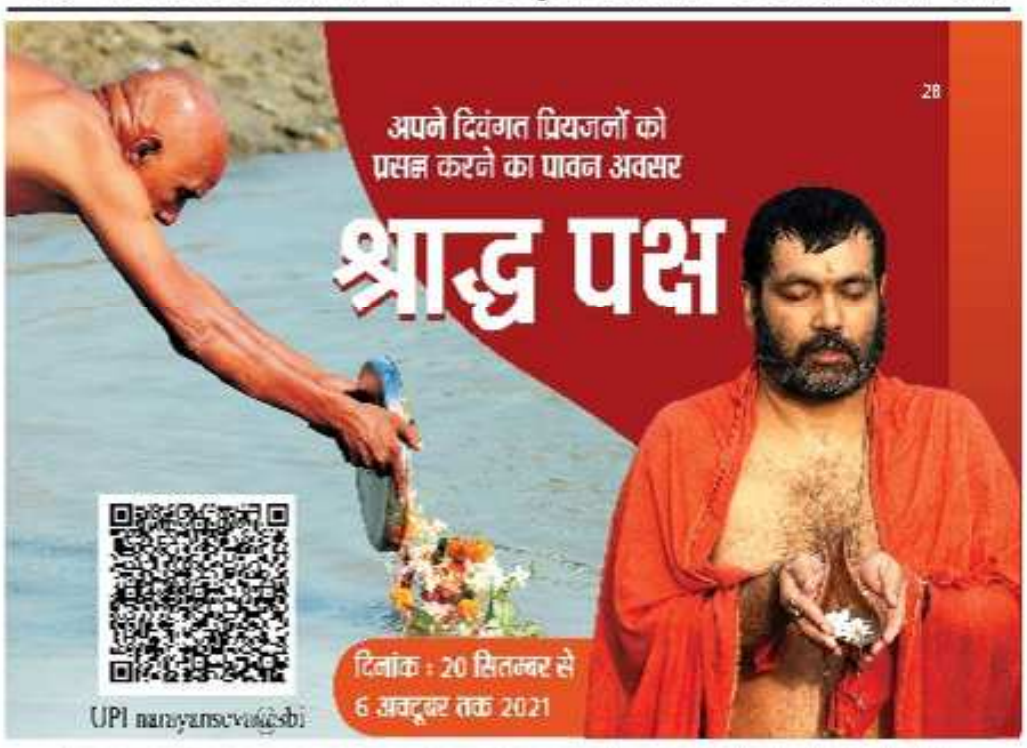

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक: कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से 4, उदयपुर (राज) स्वामित्व: नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल: ई, डी-71 बापा रावल नगर, हिम सेक्टर-6, उदयपुर मुद्रक: न्यूटेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियां का गुडा, उदयपुर सम्पादक: लक्ष्मीलाल गाडरी, मो 82 7860 7811, 9 11939 8965 • ई-मेल: mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. RJ/UD/29-154/2021-2023